© 2016 IJSRST | Volume 2 | Issue 5 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Education

बहुसांस्कृतिक भारतीय समाज में अनुवाद की प्रासंगिकता

Priyanka Srivastava

Research Scholar, JNU, New Delhi, India

सार – भौगोलिक एवं सांस्कृतिक भिन्नता के कारण ही इस संसार का नागरिक परिदृश्य बहुभाषी है। इस बहुभाषिकता से बहुसांस्कृतिकता का स्पष्ट साक्ष्य मिलता है, क्योंकि भाषा न केवल किसी समुदाय की भावाभिव्यक्ति की सहायक है, बल्कि यह उसकी संस्कृति की संरक्षणी भी होती है। समाज के इतिहास, सामाजिक व्यवहार, मनोविज्ञान, परम्परा तथा लोकाचार की प्रकृति भी भाषा में देखी जाती है। ऐसे में किसी भी भाषा में संवाद, उसकी संस्कृति से संवाद होता है। यह संवाद प्रत्येक समाज में भाषा के शाब्दिक और अशाब्दिक स्वरुप द्वारा होता है। लेकिन संवाद में भाषा के शाब्दिक स्वरुप का उपयोग सर्वाधिक किया जाता है। बहुसांस्कृतिक समाज में भी संवाद भाषा द्वारा होता है और इस संवाद की सबसे बड़ी समस्या भाषा ही होती है, क्योंकि प्रत्येक भाषा की अपनी अभिव्यक्ति शैली एक-दूसरे से भिन्न होती है। ऐसे में इस समस्या को अनुवाद द्वारा दूर किया जाता है। इसलिए अनुवाद सभी बहुसांस्कृतिक संप्रेषण का माध्यम होता है।

वर्तमान समय का मनुष्य वैश्विक समाज में जी रहा है। जहां संचार साधनों की सुविधा ने सांस्कृतिक विविधताओं के बावजूद इन्हें आपस में जोड़े रखा है। वैश्विक ग्राम की अवधारणा इस जुड़ाव से पुष्ट हुई है। स्पष्टत: वैश्विक ग्राम के आपसी जुड़ाव ने सांस्कृतिक संचार की आवश्यकता बढ़ा दी है। इस दौर में सूचना का प्रवाह भी बढ़ा है। यह प्रवाह विभिन्न संस्कृतियों द्वारा प्रवाहित है। इसलिए संवाद हेतु संप्रेषण के सभी तत्वों की गहन समझ आवश्यक है। इन सभी सांस्कृतिक सूचनाओं या संवादों को अनुवाद द्वारा बेहतर समझा जा रहा है। इस सांस्कृतिक विविधता में अनुवाद संप्रेषण का माध्यम बन गया है। इसके द्वारा सांस्कृतिक भिन्नता के बावजूद व्यापार, कला, ज्ञान, शिक्षा, सूचना, अर्थजगत, राजनीति, तकनीकी एवं अन्य विषयों पर बातचीत जारी है। वैश्विक युग में सांस्कृतिक संवाद की मांग बढ़ने से अनुवाद द्वारा उसकी पूर्ति भी बढ़ी है। लेकिन अनुवाद का उपयोग आज से नहीं हो रहा है। "वस्तु एवं विचार के विनिमय हेतु मानव सभ्यता के प्रारम्भ से ही अनुवाद का प्रयोजन होने लगा था (देवशंकर नवीन 2016)।"[1] हमारे पूर्वज दूसरे देशों के साथ संवाद, व्यापार, ज्ञान तथा धर्म प्रचार के लिए एक-दूसरे से संपर्क करते थे। इस संपर्क के लिए वे अनुवाद का सहयोग लेते थे। तब से आज तक बहुभाषी समाज के बीच संवाद के कार्य में अनुवाद का उपयोग होता है।

[1] नवीन, देवशंकर (2016). अनुवाद अध्ययन का परिदृश्य. प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय : नई दिल्ली. पृ. 9.

शुरूआती संचार के क्रमिक दस्तावेज न होने के कारण अनुवाद के आरंभ की तिथि का स्पष्ट पता नहीं चलता। लेकिन उपस्थित अनुवाद के साक्ष्य को देखने से स्पष्ट होता है कि अनुवाद का उपयोग प्राचीन काल से हो रहा था। यह उपयोग धर्म, व्यापार, विचार, ज्ञान-विज्ञान के लिए अधिक किया जा रहा था। इससे लोग एक–दूसरे से संबंध स्थापित कर रहे थे। अनुवाद ने सदैव ही विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, और मानव विज्ञान से संबंधित ज्ञान को एक समाज से दूसरे समाज तक पहुंचाया है, जो मानव इतिहास के क्रांति विकास के लिए महत्त्वपूर्ण रहा है। इसलिए विभिन्न सभ्यताओं के इतिहास, कला, साहित्य, संस्कृति और ज्ञान-विज्ञान आज बचे हुए हैं, वरन ये कब के समाप्त हो जाते। तोलेदो, बगदाद, तक्षशिला, नालंदा के साहित्य धरोहर तथा बाईबिल, कुरान, गीता, रामायण-महाभारत, कालिदास, शेक्सपियर, वड्र्सवर्थ, सुकरात, डार्विन, न्यूटन, मार्क्स, रामानुजन, आर्यभट्ट तथा रविंद्रनाथ टैगोर के रचना इत्यादि का प्रसार इसके उदाहरण हैं। मुद्रण तकनीकी के विकास ने अनुवाद द्वारा विभिन्न ज्ञान-विज्ञान की बातों को और गति प्रदान की थी। जिससे आज विश्व पटल पर विभिन्न प्राचीन साहित्यों को सभी जानते हैं।

भारत में भी अनुवाद द्वारा साहित्य, संस्कृति, कला, ज्ञान-विज्ञान, धर्म-दर्शन और विचार के कार्य होते आए हैं। भारत अपनी सभ्यता के प्रारंभ से ही विभिन्न संस्कृति, धर्म, भाषा, जाति, वर्ग, नस्ल एवं एवं विचारों वाला देश रहा है। जिस कारण यहां बहुसांस्कृतिकता, बहुजातियता, बहुभाषिकता, बहुधर्मिता एवं बहुदार्शनिकता पाई जाती है। आज भी यहां 22 संवैधानिक भाषाएं तथा 15 हजार बोलियां हैं। इस भाषिक विविधता में अनुवाद द्वारा ही संवाद किया जाता है। अनुवाद के इस सहयोग से भारत एक राष्ट्र के रूप में जुड़ा रहता है। उसकी भाषाएं और क्षेत्रीय संस्कृति एक-दूसरे के करीब आती हैं। भारतीय एकीकरण, संस्कृति, ज्ञान, दर्शन, अवधारणा तथा विचार आदि भी निर्मित होते हैं। लेकिन भारत में अनुवाद का उपयोग आज से नहीं हो रहा है। यह भारतीय सभ्यता के आरंभ से जारी है। इसकी उपस्थिति के इतिहास का दस्तावेजीकरण यहां पश्चिम की तरह उपलब्ध नहीं है। फिर भी अनुकथन, अनुवचन, पुनर्कथन, श्रुति, भाष्य, टीका, अन्वय, विश्लेषण, व्याख्या जैसे साक्ष्यों के रूपों में यह भारतीय सभ्यता में उपस्थित है। भारत पर लगातार कई बाहरी आक्रमण हुए हैं। मुग़ल, अरब, तुर्क, पुर्तगाल, फ्रांस, डच तथा अंगेजों का कई वर्षों तक शासन रहा है। इस कारण भी यहां अनुवाद का उपयोग संवाद के लिए हुआ।

“भारतीय अनुवाद उद्यम की इस अत्यन्त् प्राचीन परम्परा का सघन उपयोग उपनिषद काल से ही ज्ञानदान एवं समाज-व्यवस्था के संचालन हेतु होता आया है। भाष्यि, टीका, व्युमत्पकत्ति , विश्लेसषण, व्यायख्या, अनुवचन, अनुकथन...तमाम विधियों से भारतीय चिन्तक ज्ञान, धर्म, और विचार की अभिव्यक्ति करते आए हैं। भारतीय ज्ञान के ध्वजधारीगण अपने-अपने समय के नागरिकों के भाषा-ज्ञान और ग्रहण-शक्ति के अनुकूल सरल भाषा में शास्त्र-पुराणों का पुनर्कथन या आत्मकसातीकरण (एप्रोप्रिएशन) करते रहे हैं। रामचरितमानस या कि विभिन्न् भारतीय भाषाओं में रचित रामकथाओं,

कृष्णशकथाओं के पुनर्कथन में अनुवाद का यह उद्यम देखा जा सकता है (देव शंकर नवीन 2016)।"[2] भारत में अनुवाद के शुरुआत में पद-पाठ में संहिता बद्ध वेदों के मन्त्रों के पदों को अलग-अलग करके के संधिविच्छेद, उपसर्ग तथा उदंतादी स्वरों का वर्ण कर के संवाद किया जाता था। निरुक्ति का प्रयोग करके किसी शब्द का एक धातु या अनेक धातुओं के साथ सम्बन्ध स्थापित कर उसका अर्थ बताया जाता था। वेदों के भाष्य द्वारा ब्राहमण तथा अन्य ग्रंथो में इनका सरलीकारण करके संवाद किया जाता था। यास्क के बाद बहुत से भाष्यकार हुए परन्तु उनके भाष्य आज उपलब्ध नहीं हैं। सातवीं सदी के स्कन्दस्वामी, नारायण, उद्गीन, माधव भट्ट, वेकेंटमाधव आदि ने ऋग्वेद का भाष्य किया है। ये भाष्य साधारण जनता के क्लिष्ट संस्कृति के समझ की असमर्थता के को ध्यान में रखते हुए किया गया था। भाष्य, निरुक्ति, टीका साहित्य का सरलीकारण करके विचारों को संप्रेषित करते थे। इससे आम जनता में वेदों के विचारों का प्रसार हुआ। प्राचीन भारत में संस्कृत राजसत्ता की भाषा थी और आम जनता पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं में संवाद करती थी। राजा और प्रजा के बीच संवाद के लिए अनुवाद का उपयोग किया जाता था। इससे संस्कृत के साहित्य और धर्म संबंधित बातों को अनुवाद द्वारा पाली, प्राकृत, अपभ्रंश में समझा जाता। इस बात को संस्कृत नाटकों के पाठ को देखा जाए तो यह स्पष्ट दिखाई देता है कि संस्कृत नाटकों के नायक संस्कृत में संवाद करते हैं, जबकि स्त्री, सेवक और छोटी जातियां प्राकृत एवं सूरसेनी जैसी बोलियों में। भाषा की यह भिन्नता स्पष्ट करती है कि प्राचीन भारत में अनुवाद के द्वारा संवाद हो रहे थे। भाषाई विविधिता में अनुवाद की उपयोगिता को बताते हुए भारतीय साहित्य के इतिहास में शिशिर कुमार दास (1991) कहते हैं कि "भाषाई विभिन्नता के बावजूद कालिदास के संस्कृत में लिखे अभिज्ञान शाकुंतलम का अनुवाद सौरसेनी, मराठी और मगधी में हुआ और अनुवाद ने बहुभाषी समाज को तोड़ा नहीं, बल्कि एक-दूसरे से संवाद के लिए उत्साहित किया था।"[3]

धीरे-धीरे संस्कृत का प्रभाव कम होने लगा। इससे पाली, प्राकृत, अपभ्रंश का अधिक उपयोग किया जाने लगा। इस समय विभिन्न प्रकार के आक्रमणों ने भारत में और भी अधिक सांस्कृतिक तथा भाषिक प्रभाव डाले। 11वीं से 15वीं शताब्दी में आधुनिक भारतीय भाषओं (आसामी,मराठी, कन्नड़, तेलगु इत्यादि) के विकास से संस्कृत, पाली, प्राकृत के तकनीकी, धार्मिक पाठों को विभिन्न भाषाओं में अनुवाद कर संरक्षित किया जा रहा था। इसका उदहारण उस समय के सभी भाषाओं में रामायण और महाभारत के अनुवाद और रूपांतरण को देखने से मिलता है। ठीक उसी समय फ़ारसी भाषा में अनुवाद का कार्य शुरू हुआ। सल्तनत काल में फारसी प्रभावशाली भाषा बन गई थी। फ़ारसी द्वारा कोर्ट, कचहरी तथा शासन के कार्य होने लगे। अकबर ने धर्म और अंतरसांस्कृतिक निष्ठा को बढ़ाने के लिए संस्कृत, अरेबिक, और तुर्की पाठों के अनुवाद फ़ारसी में कराने के लिए अनुवाद एजेंसी की स्थापना की थी। इसके अंतर्गत रामायण, महाभारत, गीता, भगवत गीता, पुरारण, अथर्ववेद, योग वैशिष्ट्य आदि के अनुवाद फ़ारसी में कराए गए। "इस समय में किये गए अनुवाद को सभ्यताओं से

---

[2] नवीन, देवशंकर (2016). *अनुवाद का उद्देश्य.* Retrieved from https://deoshankarnavin.blogspot.com/2016/06/.

[3]Nandrajog, Heena. Relevance of Translation in a Multi-cultural and Knowledge-based society in India. Retrieved from file:///D:/publishing%20work/Relevance_of_Translation_in_a_Multi-cultural_and_Knowledge-based_Society_like_India.pdf. P.6.

संवाद के रूप में चित्रित किया जा सकता है (एम. असादुद्दीन 2006)।"[4] दारा शिकोह ने 15 उपनिषदों का अनुवाद संस्कृत से फ़ारसी भाषा में करवाए, ताकि वह हिन्दू और इस्लाम धर्म को तुलनात्मक रूप से समझ सके। दारा शिकोह के अनुवाद पाठ आध्यात्मिक, बौद्धिक तथा सामाजिक भी थे। हिंदी और फारसी लोगों के बीच संवाद के लिए आमिर खुसरों ने फ़ारसी-हिंदी कोश की रचना की थी। इस समय के अनुवाद से विभिन्न प्रकार के महत्त्वपूर्ण लाभ हुए। सर्वप्रथम इससे लोग द्विभाषी हुए। अब ज्यादातर लोग दो भाषाओं को जानने लगे या इससे भी ज्यादा भाषाओं को। दूसरा, इससे उर्दू जैसी नई भाषाओं का जन्म हुआ, जो फ़ारसी के साथ स्थानीय भाषाओं के संपर्क के द्वारा विकसित हुई थी। तीसरा, अनुवाद के उपयोग से भारत में नई शैलियों का विकास हुआ। जैसे फ़ारसी अनुवाद से मसनवी, क़सीदा और ग़ज़ल का विकास हुआ। इसके द्वारा फ़ारसी विधाओं का भारतीयकरण किया गया। मिर्ज़ा ग़ालिब अपन ग़ज़ल को फ़ारसी और उर्दूं में लिखते थे तथा विभिन्न प्रकार के भारतीय ग्रंथ अनूदित हो कर फ़ारसी में गए । इन सभी ग्रंथों के अनुवाद का एक सद्य सटीक दस्तावेज उपलब्ध नहीं है। परंतु कुछ उपलब्ध ग्रंथों के आधार पर बिना हीचकिचाये कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति को समृद्ध बनाने में इन अनुवाद ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

भारत में 15वीं शताब्दी में मुद्रण तकनीकी की स्थापना ने अनुवाद में गति प्रदान की। इन मुद्रण प्रेस की स्थापन द्वारा सर्वप्रथम धर्म के प्रचार के कार्य किए गए थे। जान गोंसोल्वेस ने इसाई धर्म के प्रचार के लिए तमिल भाषा में टाइप बनवाए। इसके उपरांत टमपरियन वणक्कम किताब संत फ्रांसिस जेवियर द्वारा तमिल भाषा में अनूदित की गयी थी। इस किताब में प्रार्थना और कैथोलिक निर्देश थे, जो अनुवाद द्वारा इसाई धर्म का प्रचार कर रहे थे। देवनागरी टाइप में हिन्दूपुराण की तरह क्राईस्ट पुराण का अनुवाद करके इसाई धर्म का प्रचार किया जा रहा था। पुर्तगालीयों ने भारतियों से संप्रेषण के लिए पुर्तगाली-कोंकणी तथा कोंकणी-पुर्तगाली कोश का निर्माण किया था। आत्मा राम सेठी ने सन् 1875 से 1975 तक भारत में एक हजार विदेशी भाषा से हिंदी में अनूदित साहित्य की सूची तैयार की है, जो इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि भारत में भी मुद्रण तकनीकी के विकास के साथ अनुवाद द्वारा अपने साहित्य को समृद्ध किया जा रहा था।

अंग्रेजो के आने से पूर्व भारत में अनुवाद कार्य ज्ञान की खोज के लिए किए जा रहे थे। लोग ज्ञान की समृद्धि को बढ़ावा देने के लिए अनुवाद कार्य पूरे लगन से कर रहे थे। लेकिन भारत पर शासन करने के दृष्टिकोण से अंग्रेजों ने भारत में अनुवाद द्वारा ज्ञान विस्तार के उद्देश्य को भष्ट कर दिया। लार्ड मैकाले द्वारा कहा गया कि यूरोपीय भाषा अरब और भारतीय भाषाओं से ज्यादा समृद्ध है। यहीं से प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली को तोड़ कर अंग्रेजीकरण किया गया। ब्रिटिश शासकों ने भारतीय ज्ञान का अनुवाद कर अपनी भाषा को ज्ञान से समृद्ध किया और अनुवाद माध्यम से भारतीय जनमानस को पूरे विश्वपटल पर सांप, बिच्छुओं वाला पिछड़ा और असभ्य देश के रूप में दिखाया। अंग्रेजी उपनिवेशिक भारत में प्रभावशाली भाषा बन गई थी। "सन् 1800 में फोर्ड विलियम कॉलेज की स्थापना उत्तर भारतिय भाषाओं के लिए एक

[4] Asaduddin, M. (2006). Translation and Indian literature: Some Reflection. Retrieved from http://www.ntm.org.in/download/ttvol/volume3/ARTICLES/01%20-%20Translation%20and%20Indian%20Literature%20-%20%20Some%20Reflections%20-%20M.%20Asaduddin.pdf. P.3.

बड़ी घटना थी (है (एम. असादुद्दीन 2006)।"[5] इस कॉलेज द्वारा ईस्ट इण्डिया कंपनी में कार्य करने वाले लोगों को भारतीय भाषाओं का ज्ञान दिया जा रहा था। इसमें हिन्दुस्तानी भाषाओं द्वारा अंग्रेजी में अनुवाद किया गया। फोर्ट विलियम्स कालेज की स्थापना के साथ ही किस्सा, चाहर दार्विश, दास्तान अमीर हमजा, सिंहासन बत्तीसी इत्यादि का अनुवाद किया गया। संस्कृत, अरेबिक, फारसी, बांग्ला, हिंदी, उर्दू आदि भाषओं के हजारों किताबों को अंगेजी में अनूदित कर भारतियों के स्वाभिमान को तोड़ना शुरू कर दिया गया था। इन अनुवादों ने अंगेजों को भारतियों के विषय में एक गहरी समझ दी। इससे भारत पर शासन करना आसान हो गया। विलियम जोन्स ने अभिज्ञानशाकुन्तल और चाल्स विल्किंस ने भगवत गीता का अनुवाद अंग्रेजी में सर्वप्रथम किया। प्रथम विश्व युद्ध के समय बड़े स्तर पर अंग्रेजी किताबों का अनुवाद भारतीय भाषाओं में हुआ। धीरे-धीरे अंग्रेजी भारत में सत्ता की भाषा बन गई। अनुवाद का उपयोग इस प्रभाव के लिए किया जाने लगी कि अंग्रेजी भाषा और साहित्य भारतीय भाषा और साहित्य से सर्वश्रेष्ठ है। इस समय अत्यधिक मात्र में अंग्रेजी साहित्य को भारतीय भाषाओं में अनूदित किया गया। इसके द्वारा अंग्रेजी साहित्य को भारत में बढ़ावा मिला। इसी समय बाइबिल का बहुत से भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया। बाइबिल का यह अनुवाद भारतीय भाषाओं में सरल स्वरुप में होता था। अंग्रेजों ने स्थानीय भाषाओं में व्याकरण और व्यवस्थित शब्दकोशों विकसति कर योगदान दिया। अधिकांश भारतीय भाषाओं में पहला शब्दकोश संकलित करने का श्रेय कुछ यूरोपीय या दूसरे को जाता है। बाइबिल के अनुवादों द्वारा भारत में आधुनिक अनुवाद करने के पद्धति स्थापित हुई।

धीरे-धीरे भारतियों द्वारा ब्रिटिश शासन के सामने अपने सारे हथियार डाल दिए गए। ब्रिटिश संस्कृति की आधुनिकता जो भारतियों से चुराई गयी थी; उन्हें ब्रिटिश शासक अनुवाद द्वारा अपना दिखा कर भारतियों के साथ गुलामों वाला संवाद कर रहे थे। वे अंग्रेजी भाषा और संस्कृति को लगातार भारतीय भाषाओं से सर्वश्रेष्ठ दिखा रहे थे। इससे वर्नाकुलर भाषाओं और अंग्रेजी भाषा के बीच संघर्ष भी हो रहा था। फिर भी बहुत से लोग थे जो ज्ञान के सभी ग्रंथो का अनुवाद कर भारतीय जनमानस को जगाने का प्रयास कर रहे थे। वे अंग्रेजी के ग्रंथो का अनुवाद कर जनता से संवाद कर रहे थे कि पिछड़े हम नहीं, अंगेजी शासन है। इस क्षेत्र में राजा राममोहन राय ने अपने अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत,पर्शियन, अरेबिक ज्ञान का प्रयोग भारतियों के अज्ञानता को दूर करने के लिए किया। वे उपनिषद और वेदांत का अनुवाद हिंदी, अंगेजी और बांग्ला में कर भारतियों से संवाद कर रहे थे। उन्होंने मूर्ति पूजा और सती प्रथा का विरोध किया और सभी धर्मों को एकश्वरवाद के उपदेश मानने के सन्देश दिए। उन्होंने वेदांत के सूत्रों का विस्तृत सारांश हिंदी और बांग्ला में अनूदित कर बताया कि ईश्वर की सबसे बड़ी पूजा ज्ञान द्वारा होती है। राममोहन राय हिदू धर्म ग्रंथो का अनुवाद कर बांग्ला भाषा को समृद्ध कर रहे थे तो वहीं बुराइयों की आलोचना भी अनुवाद द्वारा कर रहे थे। जहां एक ओर राजा राममोहन राय थे, तो दूसरी ओर देश की स्थिति सुधरने के लिए अनुवाद का प्रयोग भारतेंदु हरिश्चंद्र कर रहे थे। उन्होंने बांग्ला नाटक विद्यासुन्दरम का अनुवाद

[5] Asaduddin, M. (2006). Translation and Indian literature: Some Reflection. Retrieved From http://www.ntm.org.in/download/ttvol/volume3/ARTICLES/01%20-%20Translation%20and%20Indian%20Literature%20-%20%20Some%20Reflections%20-%20M.%20Asaduddin.pdf. P.3.

हिंदी में किया। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने ब्रिटिश शासन के गुलामी से अपने देश के लोगों को छुटकारा दिलाने के लिए सभी भाषाओं के श्रेष्ठ ग्रंथो का अनुवाद करने का आह्वान किया। इसके पीछे उद्देश्य था कि लोग अपनी भाषओं में अनुवाद द्वारा विभिन्न भाषओं के ज्ञान को प्राप्त करेंगे और विदेशी आक्रमणकारियों की सारी राजनीति समझ पाएंगे। अनुवाद द्वारा हमें अपने धर्म की पहचान होगी और विवेक को जागृत कर हम आत्मनिर्भर होंगे; जिससे अंगेजों की गुलामी से स्वतंत्र हो जाएंगे। इसलिए उन्होंने द मर्चेंट ऑफ वेनिस का अनुवाद दुर्लभ बंधु नाम से किया। भारतेंदु ने अनुवाद को सामाजिक अनुवाद का हथियार मान कर कर्पूर मंजरी, मुद्रा राक्षस, भारत जननी, धनंजय विजय आदि कई रचनाओं के हिंदी में अनुवाद किए। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी भाषा की समृद्धि तथा शोक में डूबे देश को जागृत करने के लिए 14 महत्वपूर्ण रचनाओं का अनुवाद हिंदी भाषा में किया था। हर्बर्ट स्पेंसर की एजुकेशन तथा जॉन स्टुअर्ट मिल की रचना ऑन लिबर्टी का अनुवाद शिक्षा और स्वाधीनता नाम से किया। इन दोनों अनुवाद से टूट चुके भारतीय जनमानस में उर्जा आयी और उन्हें ब्रिटिश शासन के पिछड़ेपन का ज्ञान हुआ। इन दोनों ग्रथों के अनुवादों ने भारतियों को ब्रिटिश शासन काल से लड़ने के लिए प्रेरित किया। रामचंद्र शुक्ल ने जर्मन कृति के अंग्रेजी अनुवाद द रिडल्स ऑफ यूनिवर्सल का अनुवाद विश्व प्रपंच शीर्षक से किया। प्राणीविज्ञान की इस अनूदित रचना का हिंदी में विशेष महत्व इसलिए था क्योंकि इसने बिना वैज्ञानिक हिंदी कोश के हिंदी को ग्रन्थ दिया, जिससे हिंदी भाषी लोगों के ज्ञान का विस्तार हुआ। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पहले बांग्ला और हिंदी में अधिक अनुवाद हुए क्योंकि बंगाल हिंदी और बांग्ला पत्रकारिता का गढ़ था। अन्य भाषाओं में भी अनुवाद हो रहे थे। लोगों द्वारा भाषायी समाचार पत्रों में अनुवाद द्वारा संवाद कर रहे थे। इसलिए ब्रिटिश सरकार ने वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट भारतीय समाचार पत्रों पर लगाए। लेकिन भारतीय संवाद पद्धति को अनुवाद ने निरंतर गति प्रदान की।

ब्रिटिश शासन द्वारा भारतीय अनुवाद कार्य को अनुवाद की राजनीति ने बर्बाद कर दिया; जिससे भारत इतिहासविहीन, संस्कृति और परम्परा के समृद्ध को खो दिया। इससे भारतीयों पर ऐसा असर पड़ा कि उन्होंने अपने यहा के समृद्ध ज्ञान परम्परा को भूल दिया और ब्रिटिश शासन द्वारा बताए ज्ञान को स्वीकार कर लिया है। ब्रिटिश अनुवाद के राजनीति का आज भी उतना ही असर है। इसलिए भारतीय भाषाओं में स्वतंत्रता के बाद खाई और भी बढ़ती चली गयी। आज भारतीय भाषओं में अंग्रेजी अनुवाद पर ज्यादा जोर है और आपसी संवाद नाम मात्र के हो रहे हैं। सरकार की त्रिभाषा नीति भी कारगर साबित नहीं हुई। समाचार एजेंसियों में अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद हो रहे हैं। भारत में आज भी ब्रिटिश शासन के असर अनुवाद द्वारा संवाद पर दिखाई पड़ता है। अंग्रेजी में अनुवाद आज भी भारतीय भाषाओं में अनुवाद पर भारी पड़ रही है। भारतीय भाषाएं आज भी अंग्रेजी के चुंगल से अपने आप को बचा नहीं पायी हैं।

आज भारतीय भाषा परिदृश्य पर भूमंडलीकरण का प्रभाव है। भूमंडलीकरण ने संवाद के लिए विभिन्न भाषओं में तेजी से अनुवाद कर सवांद करने को मजबूर किया है। भारत विश्व का सबसे बड़ा बाज़ार भी बन गया है। लेकिन यहां संवाद अंग्रेजी वाया अन्य भाषओं से हो रहे हैं, जिससे भारतीय भाषा और बोलियों की परम्परा संस्कृति खतरे में हैं। अंग्रेजी से हिंदी या अन्य भाषाओं में अनुवाद उच्च स्तर के नहीं हैं, जिससे पाठक अंग्रेजी में पढ़ना अधिक सुविधा जनक समझता है।

भारत में अनुवाद तो तेजी से हो तो रहे हैं, लेकिन अधिकतर अनुवाद ज्ञान की जगह धन कमाने और काम चलाने भर के हैं। जिससे अनुवाद का स्तर सतही होता चला जा रहा है। भारतीय भाषओं के आपसी अनुवाद की रफ़्तार बहुत धीमी है और न ही उन्हें प्रोत्साहित किया जा रहा है। वर्तमान समय में ऐसी अनुवाद की संस्थाएं नहीं हैं, जो भारतीय तथा विदेशी भाषओं में अनुवाद का प्राशिक्षण ज्ञान के विस्तार के लिए दे। ज्ञान आयोग ने अनुवाद की आवश्यकता बतायी तो है। परन्तु प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी की अनिवार्यता भी निश्चित की है। आज भारतीय भाषाएं जो कि अपने आप में क्लासिक साहित्य हैं, अनूदित न होने के कारण भारत में ज्ञान के संचार को कुंद कर रही हैं। लेकिन फिर भी भारतीय भाषाओं में अनुवाद द्वारा संवाद हो रहे हैं। यह भारत के बहुभाषिक परिदृश्य में संवाद के लिए आवश्यक है।

संदर्भ ग्रन्थ

[1]. अय्यर, विश्वनाथ, ई. एन. (2007). *अनुवाद : भाषाएं-समस्याएं.* दिल्ली: ज्ञान गंगा.

[2]. गोस्वामी, कृष्ण कुमार (2008). *अनुवाद विज्ञान की भूमिका.* नई दिल्ली : राजकमल.

[3]. गोपीनाथ, जी (2004). *अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग.* इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन.

[4]. तिवारी, भोलानाथ (1972). *अनुवाद विज्ञान.* नई दिल्ली : अमर प्रिटिंग प्रेस.

[5]. नगेन्द्र, डॉ. (1993). *अनुवाद विज्ञान.* नई दिल्ली : हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय.

[6]. नवीन, देवशंकर)2016). अनुवाद अध्ययन का परिदृश्यप्रकाशन विभाग ., सूचना और प्रसारण मंत्रालय नई : .दिल्ली

[7]. नवीन, देवशंकर (2016). *अनुवाद का उद्देश्य.*

Retrieved from http://deoshankarnavin।blogspot।in/search?updated-max=2016-07-17T16:12:00%2B05:30&max-results=7

[8]. नवीन, देवशंकर (2015). *समकालीन साहित्य चिंतन और अनुवाद अध्ययन.*

Retrieved from http://deoshankarnavin।blogspot।in/search?updated-max=2015-02-01T22:50:00%2B05:30&max-results=7&start=11&by-date=false

[9]. नवीन, देवशंकर (2011). *अनुवाद और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य.*

Retrieved from http://deoshankarnavin।blogspot।in/search?updated-max=2011-02-06T19:00:00%2B05:30&max-results=7&start=15&by-date=false

[10]. नवीन, देवशंकर (2011). *अनुवाद परम्परा की पहचान*

Retrieved from http://deoshankarnavin।blogspot।in/search?updated-max=2011-01 24T19:26:00%2B05:30&max-results=7&start=16&by-date=false

[11]. पालीवाल, रीतारानी (2007). *अनुवाद प्रक्रिया एवं परिदृश्य*. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन.

[12]. रजसुभे, सूर्यनारायण (2009). *अनुवाद का समाजशास्त्र*. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन.

[13]. Asaduddin, M. (2006). Translation and Indian literature: Some Reflection. Retrieved From http://www.ntm.org.in/download/ttvol/volume3/ARTICLES/01%20-%20Translation%20and%20Indian%20Literature%20-%20%20Some%20Reflections%20-%20M.%20Asaduddin.pdf.

[14]. Kothari, Rita (2006). Translating India. New Delhi: Foundation Book Pvt। Ltd.

[15]. https://nptel.ac.in/courses/109104050/2